

## PM के शपथ ग्रहण में शामिल होंगे बमिसटेक प्रमुख

### चर्चा में क्यों?

भारत ने 30 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके मंत्रपरिषद के आयोजित होने वाले शपथ ग्रहण समारोह में बमिसटेक (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation -BIMSTEC) और शंघाई सहयोग संगठन (Shanghai Cooperation Organisation-SCO) के सदस्य देशों के प्रमुखों को आमंत्रित किया है। ध्यातव्य है कि वर्ष 2014 में आयोजित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान सहित दक्षिण देशों के नेताओं को आमंत्रित किया गया था।

- बमिसटेक देशों के नेताओं के अलावा भारत ने करिगसितान के राष्ट्रपति सोरोनबाय जेनेबकोव और मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रावनिद जगननाथ को भी शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया है, ये दोनों इस वर्ष 'प्रवासी भारतीय दिवस' पर मुख्य अतिथि भी थे। मॉरीशस के प्रधानमंत्री को वर्ष 2014 के शपथ ग्रहण समारोह में भी आमंत्रित किया गया था।
- वर्तमान में करिगसितान SCO का अध्यक्ष है, जो अगले महीने बश्किके (Bishkek) में आयोजित होने वाले शिखर सम्मेलन की मेज़बानी भी करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस सम्मेलन का हस्ति होंगे।
- भारत द्वारा शपथ ग्रहण समारोह में बमिसटेक के सदस्य देशों के नेताओं को आमंत्रित किया जाना सरकार की '[पड़ोस पहले/नेबरहुड फ़र्स्ट नीति \(Neighbourhood first policy\)](#)' के अनुरूप है।

### दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC)

- दक्षिण/सारक (South Asian Association for Regional Cooperation-SAARC) दक्षिण एशिया के आठ देशों का आर्थिक और राजनीतिक संगठन है। सारक की स्थापना 8 दिसंबर, 1985 को हुई थी और इसका मुख्यालय काठमांडू (नेपाल) में है। सारक का प्रथम सम्मेलन ढाका में दिसंबर 1985 में हुआ था।
- इस समूह में अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं। वर्ष 2007 से पहले सारक के सात सदस्य थे, अप्रैल 2007 में सारक के 14वें शिखर सम्मेलन में अफगानिस्तान इसका आठवाँ सदस्य बन गया था।
- प्रत्येक वर्ष 8 दिसंबर को सारक दिवस मनाया जाता है। इसका संचालन संगठन के महासचिव द्वारा की जाती है, जिसकी नियुक्ति तीन साल के लिये देशों के वर्णमाला क्रम के अनुसार की जाती है।

### उम्मीदों पर खरा नहीं उतर रहा सारक

- दरअसल, पछिले 30 सालों से सारक की जो स्थिति है, उससे लगता है कि यह संगठन मात्र औपचारिक बनकर रह गया है।
- केवल सम्मेलनों का नियमित रूप से आयोजित होना किसी संस्था के जीवित रहने का प्रमाण नहीं है। जहाँ तक सारक द्वारा ठोस कदम उठाने का सवाल है तो पाकिस्तान के असहयोग और राजनीतिक विभाजन की वजह से ऐसा नहीं हो पा रहा है।
- सदस्य देशों में कई बार आतंकवाद के खिलाफ जंग को लेकर भी सहमति बनी है लेकिन आतंकवाद के मुद्दे पर सारक के सदस्य देश और भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान ने कभी साथ नहीं नभिया और यही सारक की वफिलता की एक बड़ी वजह बन गया।
- पछिले कुछ सालों से दक्षिण लगभग नषिकरयि हो गया है। संभवतः यही कारण रहा कि भारत सहित कई सदस्य देशों ने वर्ष 2016 में पाकिस्तान के इस्लामाबाद में होने वाले दक्षिण सम्मेलन में हस्ति लेने से इनकार कर दिया था।
- जनवरी 2016 में पठानकोट एयरबेस और सतिंबर में उड़ी में हुए आतंकी हमले में 19 भारतीय जवानों के शहीद होने के बाद भारत ने पाकिस्तान से अपने क्षेत्र में होने वाली आतंकी गतिविधियों के संबंध में कठोर कार्यवाही करने का दबाव बनाया। इसके बाद कई दक्षिण सदस्यों ने भी भारत के रुख का समर्थन किया और दक्षिण सम्मेलन का बहिष्कार करने का नरिणय लिया।
- नवंबर 2014 में काठमांडू में आयोजित दक्षिण सम्मेलन के बाद अभी तक इसका कोई सम्मेलन आयोजित नहीं हुआ है। दक्षिण के लगभग नषिकरयि होने के बाद ही भारत ने बमिसटेक समूह को मज़बूत बनाने पर बल दिया। यही कारण है कि सतिंबर 2016 में गोवा में आयोजित ब्रिक्स-बमिसटेक सम्मेलन में बमिसटेक के नेताओं को आमंत्रित किया गया था।

### सारक की असफलता के कारण

#### भारत-पाकिस्तान संबंधों का बेहतर न हो पाना

- भारत और पाकस्तान के बीच कूटनीतिक सहमति का अभाव और सैन्य संघर्ष के कारण दक्षिण-पूर्व क्षेत्रीय सहयोग कमजोर हुआ है।
- वदिति हो का उड़ी आतंकवादी हमले के बाद भारत ने पाकस्तान में होने वाले 19वें सार्क शिखर सम्मेलन का बहिष्कार किया था।
- बांग्लादेश, अफगानिस्तान और भूटान ने भी भारत के पक्ष में अपनी सहमति जताई और अंततः सम्मेलन नरिस्त हो गया था।

## क्षेत्रीय व्यापार की चिंताजनक स्थिति

- सार्क देशों के बीच क्षेत्रीय व्यापार में न के बराबर प्रगति हुई है। वदिति हो का सदस्य देशों के बीच आपसी व्यापार उनके कुल व्यापार का 3.5% ही रहा है।
- दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार संघ (South Asian Free Trade Association) के तहत की गई पहलें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही हैं।

## बेहतर कनेक्टिविटी का अभाव

- इस क्षेत्र में व्यापार के मोर्चे पर यदि प्रगति नहीं हुई है तो इसका एक बड़ा कारण कनेक्टिविटी का बेहतर न हो पाना है।
- बीबीआईएन मोटर वाहन समझौता (BBIN Motor Vehicle Agreement) जैसी उप-क्षेत्रीय पहलें रुकी हुई हैं।
- सार्क की वीजा प्राप्ति में राहत योजना (SAARC Visa Exemption Scheme) का लाभ केवल कुछ गणमान्य व्यक्तियों को ही प्राप्त है।
- सार्क देशों में बुनियादी ढाँचे की खस्ता हालत के कारण भी बेहतर कनेक्टिविटी सुनिश्चिती नहीं हो पाई है।

## बमिस्टेक

- बमिस्टेक यानी बे ऑफ बंगाल इनशिएटिवि फॉर मल्टीसेक्टरल टेक्निकल एंड इकोनामिक कोऑपरेशन (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation -BIMSTEC) दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों का एक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग संगठन है जिसकी स्थापना 6 जून, 1997 को बैंकाक घोषणापत्र (Bangkok Declaration) से हुई थी।
- आर्थिक और तकनीकी सहयोग के लिये बनाए गए इस संगठन में भारत समेत नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्याँमार और थाईलैंड शामिल हैं।
- सात देशों का यह संगठन मूल रूप से एक सहयोगात्मक संगठन है जो व्यापार, ऊर्जा, पर्यटन, मत्स्यपालन, परिवहन और प्रौद्योगिकी को आधार बनाकर शुरू किया गया था लेकिन बाद में इसमें कृषि, गरीबी उन्मूलन, आतंकवाद, संस्कृति, जनसंपर्क, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन को भी शामिल किया गया।
- बमिस्टेक का मुख्यालय ढाका में बनाया गया है। बमिस्टेक के महत्त्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दुनिया की लगभग 22 फीसदी आबादी बंगाल की खाड़ी के आस-पास स्थिति इन सात देशों में रहती है जिनका संयुक्त जीडीपी (Gross Domestic Product-GDP) 2.7 ट्रिलियन डॉलर के बराबर है।
- बमिस्टेक के मुख्य उद्देश्यों में बंगाल की खाड़ी के किनारे दक्षिण एशियाई और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच तकनीकी और आर्थिक सहयोग प्रदान करना शामिल है।

## बमिस्टेक भारत के लिये महत्त्वपूर्ण क्यों है?

- बमिस्टेक के 7 देश बंगाल की खाड़ी के आसपास स्थिति हैं जो एकसमान क्षेत्रीय एकता को दर्शाते हैं। भारत ने शुरू से ही इस संगठन को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाई है।
  - बमिस्टेक दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच एक सेतु की तरह काम करता है। इस समूह में दो देश दक्षिण-पूर्व एशिया के हैं। म्याँमार और थाईलैंड भारत को दक्षिण-पूर्वी इलाकों से जोड़ने के लिये से बेहद अहम हैं।
  - बमिस्टेक देशों के बीच मजबूत संबंध भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास को गति प्रदान कर सकता है। इससे भारत-म्याँमार के बीच परिवहन परियोजना और भारत-म्याँमार-थाईलैंड राजमार्ग परियोजना के विकास में भी तेजी आएगी।
  - भारत के अलावा बमिस्टेक के सदस्य देशों के लिये यह संगठन काफी महत्त्वपूर्ण है। बमिस्टेक के ज़रिये बांग्लादेश जहाँ बंगाल की खाड़ी में खुद को मात्र एक छोटे से देश से ज़्यादा महत्त्व के रूप में देखता है वहीं, श्रीलंका इसे दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने के अवसर के रूप में देखता है। इसके ज़रिये श्रीलंका हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में अपनी आर्थिक गतिविधि भी बढ़ाना चाहता है।
  - दूसरी तरफ, नेपाल और भूटान के लिये बमिस्टेक बंगाल की खाड़ी से जुड़ने और अपनी भूमिगत भौगोलिक स्थिति से बचने की उम्मीद को आगे बढ़ाता है।
  - वहीं म्याँमार और थाईलैंड को इसके ज़रिये बंगाल की खाड़ी से जुड़ने और भारत के साथ व्यापार करने के नए अवसर मिलेंगे। बमिस्टेक के ज़रिये दक्षिण-पूर्व एशिया में चीन के बढ़े पैमाने पर घुसपैठ को भी रोकने की कोशिश की जा सकती है।
- बमिस्टेक न केवल दक्षिण व दक्षिण-पूर्वी एशिया को जोड़ता है बल्कि हिमालय और बंगाल की खाड़ी की पारस्थितिकी को भी शामिल करता है। एक-दूसरे से जुड़े साझा मूल्यों, इतिहासों और जीवन के तरीकों के चलते बमिस्टेक शांति और विकास के लिये एक समान स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।
- भारत के लिये बमिस्टेक 'पड़ोसी सबसे पहले और पूरव की ओर देखो' की हमारी वदिश नीतिकी प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिये एक स्वाभाविक मंच है।

## क्या बमिस्टेक सार्क का विकल्प बनकर उभरा है?

- बमिस्टेक दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच एक पुल की तरह काम करता है। इसके सात में से पाँच देश सार्क के सदस्य हैं, जबकि दो आसियान के सदस्य हैं। ऐसे में यह सार्क और आसियान देशों के बीच अंतर क्षेत्रीय सहयोग का भी एक मंच है।
- बमिस्टेक के गठन के पहले भी आपसी सहयोग को लेकर एशिया में क्षेत्रीय संगठन अस्तित्व में रहे हैं जिसमें सार्क अहम है। पछिले वर्षों में बमिस्टेक अपने एजेंडा का मज़बूती से वसितार कर रहा है। इस समूह ने प्राथमिकता के 14 क्षेत्रों की पहचान की है जिनमें से 4 फोकस क्षेत्रों में भारत लीड कंट्री है, इसमें परविहन और संचार, पर्यटन, पर्यावरण और आपदा प्रबंधन के साथ आतंकवाद के खिलाफ रणनीति शामिल है।
- विशेषज्ञों के अनुसार, सार्क की वफिलता और भारत-पाकस्तान के बीच आपसी तनाव के बीच बमिस्टेक का महत्त्व बढ़ रहा है जो आने वाले समय में क्षेत्रीय सहयोग का बड़ा मंच साबति हो सकता है।

## स्रोत- द हट्टि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/bimstec-heads-invited-to-pm-swearing-in>

